मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष - 20 अंक - 6
(अप्रैल - 2024)
Vol - XX Issue No - VI
(April - 2024)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0 IMPACT FACTOR

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0
» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-20 अंक - 6 , अप्रैल - 2024
Vol - XX, Issue No. VI
April - 2024
Impact Factor - 8.0
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

संपादक
डॉ. मोहन बैरागी
अक्षरवार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक मंडल

प्रो. जगदीशचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. राजश्री शर्मा, प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. डी. डी. बेदिया, विभागाध्यक्ष
पं. जवाहर लाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध
संस्थान, व आईक्यूएसी प्रभारी, विक्रम
युनिवर्सिटी, उज्जैन, मप्र.
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' जनसंपर्क
अधिकारी, आरजीपीवी, भोपाल, मप्र.
प्रो. उमापति दिक्षित, प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
प्रो. मोहसिन खान, विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रायगढ़, महाराष्ट्र
डॉ. दिग्विजय शर्मा, सहायक प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
डॉ. भेरूलाल मालवीय, सहायक प्राध्यापक
शा. नवीन महाविद्यालय, शाजापुर, मप्र.
डॉ. उपेन्द्र भार्गव, सहायक प्राध्यापक
महर्षि पाणिनि विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
डॉ. रूपाली सारये, सहा.प्राध्यापक
भाषा विभाग, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना, एसो. प्रोफेसर,
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वि.वि, इंदौर, मप्र.
डॉ. पराक्रम सिंह, के.हि.सं., दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे),
श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),
डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस),
प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),
डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),
डॉ. तुलसीदास परौहा, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया
(उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

नोटः- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

Peer Review Board/Committee

1. **Dr. Shalini Gupta, Asasistant Professor,ovt. Ganesh Shankar Vidyarthi College,Mungaoli,Ashoknagar ,MP**
2. **Shishir Desai, UDT,Govt.Girls.H.S.scool Sanawad M.P.**
3. **Dr. Parikshit Layek, Sri RamaKrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag.**
4. **Vandana Singh Yadav, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand**
5. **Dr. Mukesh Chandra Dwivedi, Principal, RSGU PG College Pukhrayan Kanpur Dehat, 209111**
6. **DIPITI YADAV, BABA SHAEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY, LUCKNOW U.P,**
7. **Dr. PRABHA CHOUDHARY,Jawahar Inter College, Rardhana, Meerut**
8. **Dr APARNA U NAIR,St. XAVIER'S COLLEGE VAIKOM, KOTHAVARA, KOTTAYAM**
9. **Dr Bhawna shrivas,Govt geetanjali girls p g College Bhopal Madhya Pradesh**
10. **Sneha Khare,Govt. P.G college Rajgarh**
11. **Dr Jeetendra Kumar Pandey, Government College Nashtigawan Rewa MP**
12. **Dr Radhika Devi,A.K.P(P.G) COLLEGE KHURJA BULANDSHAHR**
13. **Rashmi pandey,Atal bihari vajpayee University bilaspur Chhattisgarh**
14. **Dr. Nisha Sharma,Future Institute of Management & Technology**
15. **Dr. Buddhi prakash, Associate professor, Jain diwakar kamla college, kota, rajasthan**
16. **Dr. Kumari Subhra Rani Sil (Assistant Professor),S.B.M. Teachers' Training College, Hazaribag**
17. **Dr. Priya Deo Assistant Professo,Sri Ramakrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag)**
18. **Dr. Samapti Paul,Principal,Sri Ramakrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag)**
19. **Dr. C.P. Raju, HOD, St. Aloysius College, Elthuruth, Trissur, Kerala**

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

» शिवानी के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित प्रेम संबंध व नारी
डॉ. अशीष पाण्डेय, नीलम मीना 07
» धूमिल की कविता में राजनीति और विरोध के स्वर
डॉ. मिथलेश कुमारी 12
» वैदिक साहित्य में जन्तु विज्ञान की अवधारणा
डॉ. तोषी 16
» निर्मल वर्मा के चिंतन में सृजन की प्रक्रिया
डॉ. बीना जैन 18
» ग्रामीण विकास में गांधीजी के आर्थिक दर्शन की भूमिकाः उज्जैन जनपद के विशेष संदर्भ में
अभिषेक शुक्ला 23
» भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्य एवं आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास
नितिश कुमार 26
» हिमाचल की बोलियां और उर्दू
डॉ. अब्दुल लतीफ 29
» हिंदी उपन्यास एवं आत्मकथा में दिव्यांग विमर्श का परिक्षण
वैशाली सिंघल, प्रो. (डॉ.) बीना रूस्तगी 32
» हिंदी व्याकरण में नागरी प्रचारिणी सभा की भूमिका
धर्मवीर 35
» सहज भावबोध और संवेदना के कवि : केदारनाथ सिंह
राजू मौर्य 38
» समकालीनता और आधुनिकता में अंर्तसंबंध
अजय कुमार चौधरी 41
» श्रीराम परिहार के ललित निबंधों में जीवन मूल्य
डॉ. रीता राज 46
» मुंशी प्रेमचंद का कथा साहित्य : स्त्री जीवन के विविध आयाम
श्रीमती बेलासो तिग्गा, डॉ. निधि वर्मा 48
» रैदास : कविता में मनुष्यता के प्रतिष्ठाता
हिमांशी गंगवार 53
» राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति
डॉ. कुमुद कला मेहता 57
» जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री चेतना रूपी स्त्री-दृष्टि : आधुनिक युग के संदर्भ में
अनीता कुमारी 60
» कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के महाकाव्य रामदूत में कल्पना तत्व
डॉ. रेखा मेहता 65
» इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में कृषि संस्कृति की समस्याएँ
प्रो. (डॉ.) मधुबाला यादव, संतोष कुमार यादव 68
» पारिवारिक मूल्यों की संदर्शिका : मानस
डॉ. उदारता 70
» अवधी लोक-साहित्य एवं भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ
डॉ. संतोष कुमार विश्वकर्मा 73
» उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन
प्रीति कपूर 76
» भारत में विमुद्रीकरण का कालेधन पर प्रभाव
डॉ. हरिशचन्द्र तिवारी 79
» जनपद बलिया में नगरीकरण की प्रवृत्तियां तथा नगरीय पदानुक्रम में परिवहन मार्गो की भूमिका
जागृति विश्वकर्मा, डॉ. रत्न प्रकाश द्विवेदी 81
» 'कलि-कथा : वाया बाइपास' स्मृतियों में बसे इतिहास से वर्तमान के यथार्थ का विश्लेषण
इफ्फत मेहदी 84
» 'सतत विकास के लक्ष्य और ब्रिक्स राष्ट्रों के मध्य आर्थिक असमानता'
डॉ. कमलेश कुमार दुबे 87
» तुलसी का विशिष्ट प्रदेय - आधुनिक संदर्भ में
डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय 92
» स्त्री अस्मिता : युगीन परिस्थिति और साहित्य में अभिव्यक्ति का स्वरूप
डॉ. बुद्धदेव प्रसाद सिंह 96
» महाभारताख्यानाधृत 'एकलव्य' खण्ड काव्य में आधुनिकता बोध
डॉ. सोहन लाल 101
» 'रीतिकालीन काव्य की अर्न्तदृष्टि'
डॉ. अमीर हसन 105
» भारत में चिश्तिया सिलसिला का उद्भव व प्रभाव
डॉ. वेद प्रकाश 109
» 'तमस' उपन्यास में साम्प्रदायिकता एवं गाँधीवाद
अक्षय पंवार, डॉ. आशा अग्रवाल 114
» अटल जी का व्यक्तित्व युगों-युगों तक प्रासंगिक एवं अनुकरणीय
डॉ. उषा मिश्रा 117
» हिन्दी साहित्य का स्वर्ण-युग : आधुनिक काल
डॉ. रमेश नारायण पुरोहित 122
» हिन्दू संस्कृति
डॉ. गुलजार सिंह ठाकुर 127
» भारतीय ज्ञान परंपरा एवं 'मंदिर प्रबंधन'
प्रो. डी. डी. बेदिया 129

» लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका : विशेष संदर्भ उत्तराखण्ड
डॉ. भावना मासीवाल 131

» भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं की महत्ता
सोनिका तिवारी 135

» हिंदी आदिवासी कविताओं में स्त्री का सामुदायिक संघर्ष
गावीत राकेश राजू 137

» महेन्द्र भीष्म के 'मैं पायल' उपन्यास में अस्तित्व बोध एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता के प्रश्न
अजय कुमार, डॉ. रमेश कुमार 140

» मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में आर्थिक व राजनैतिक स्थिति
गीता सिंह 143

» मिथिलेश्वर की उपन्यास रचना में समकालीन यथार्थ
गंगाशरण वत्स, डॉ. ओमवती देवी 147

» मानव जीवन में नैसर्गिक न्याय की उपादेयता
डॉ. सुखवीर सिंह 150

» श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में निहित सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ
ज्ञानेंद्र कुमार, डॉ. गीता पांडेय 153

» चीतू पिंडारी
डॉ. आदर्श चौधरी 158

» दलित और आदिवासी की सुधारमूलक एवं विरोधमूलक कविता
पुष्पेश कुमार 160

» अलका सरावगी के शेष कादम्बरी उपन्यास में संस्कृति का अनुशीलन
कविता कोठारी 163

» अमरीका का प्रवासी कथा हिंदी साहित्य
लक्ष्मी कस्तुरे 166

» पुस्तक समीक्षा - 'छोटी सी आशा' लघु कथा संग्रह
लेखिका- डॉ. रेणु चन्द्रा,
समीक्षक - डॉ. शीताभ शर्मा 168

» "The Contribution of Kaumarbhritya jeevaka in Ancient Ayurveda medicine and its relevance in the present scenario : A historical study"
Dr. Ravindra Kumar 170

» "Role of Pre-primary Educators to Successful Early Identification of Children 'At Risk' for Learning Disabilities"
Ram Shankar Saxena
Prof. Anju Agarwal 174

» Effect of Heavy Metal Copper on Heamatology and Biochemistry of Fish
Arun Kumar Verma
Prof. P.R.Yadav 178

» Trends of Foreign Direct Investment in India From 2011-12 to 2022-23
Dr. Rashmi Singh
Dr. Nirmala Dongre 181

शोध आलेख प्रकाशन संबंधी नियम

शोध आलेख 2500 से 5000 शब्दों का होकर यूनिकोड मंगल अथवा कृतिदेव 10 में 12 के फॉन्ट साइज में ही भेजें। शोध आलेख एपीए एमएलए फार्मेट में होना आवश्यक होकर फुटनोट व रिफ्रेंसेस के साथ भेजना आवश्यक है। अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें।

पुस्तकों से संदर्भ देने के लिए क्रम

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम; पुस्तक का शीर्षक (इटैलिक्स में; प्रकाशक का नाम और पूरा पता (प्रकाशन का वर्ष) कोष्ठक में; पृष्ठ संख्या ....।

द्विवेदी,हजारी प्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, चौदहवीं आवृति, 2014, पृ. 108

पत्रिकाओं के संदर्भ

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। लेख का शीर्षक। जर्नल का शीर्षक/नाम (इटैलिक्स में)। वॉल्यूम। संस्करण (महिना, वर्ष): पृष्ठ संख्या। प्रकाशन मीडिया।

वेबसाइट के उद्धरण का प्रारूप

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। ''पृष्ठ का शीर्षक।''
क्षेत्र शीर्षक। (साईट) प्रकाशित करने वाली कंपनी। (युआरएल) तथा सर्च डेट (अभिगमन तिथि)।
पुस्तक, पत्रिका, आवधिक, वेबसाइट आदि) के शीर्षक को इटैलिक में लिखें।
शोध आलेख के साथ प्लेगरिज़्म रिपोर्ट / स्व घोषणा पत्र (आलेख की मौलिकता व अप्रकाशित होने के संदर्भ में) अवश्य भेजें।
आलेख की वर्ड और पीडीएफ दोनों फाइल् अनिवार्य रूप से भेजें।
शोध आलेख प्रत्येक माह की 7 तारीख तक आगामी माह के अंक के लिए स्वीकार्य होंगे।
शोध आलेख का प्रकाशन रिव्यू कमेटी द्वारा अनुसंशा के आधार पर किया जावेगा।

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - VI, April - 2024
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के महाकाव्य रामदूत में कल्पना तत्व

डॉ. रेखा मेहता

हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी, चम्पावत

आचार्य प्रवर डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह छायावाद युग के सिद्ध साहित्यकार हैं। भारतीय संस्कृति,भारतीय जीवन एवं काव्य मूल्यों के प्रति विन्रम समर्पण के साथ आधुनिक जीवन-दृष्टि का श्रेष्ठतम समन्वय कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के काव्य को गरिमामय बनाता है।

आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह का जन्म उत्तर-प्रदेश के जिला सीतापुर कस्बे से दो किलोमीटर दूर पैसिया नामक गाँव में, क्षत्रिय वंश में शरद पूर्णिमा संवत् 1967 तद्नुसार 18 अक्टूबर, सन् 1910 में ठाकुर गजराज सिंह के घर में हुआ। इनकी माता गार्गी देवी साध्वी तथा ईश्वर भक्त धर्म परायण महिला थीं। डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह अपने विद्यार्थी जीवन में ही काव्य रचना में प्रवृत्त हो चुके थे परन्तु 1933-34 तक आपकी साहित्य साधना अपने समकालीन रचनाकारों की भाँति यश-कीर्ति प्राप्त कर चुकी थी। आप मनीषी, विन्रम, वैष्णव भारतीय संस्कृति के उपासक, चिन्मय भावक समर्थ एवं बहुमुखी काव्य शिल्पी हैं। कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के काव्य की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी परिष्कृत और प्रांजल पदावली है जो भाषा पर उनके अधिकार को ही नहीं, उसकी गहरी पहचान की भी परिचायक है। उनका चिन्तन प्राचीन तथा आधुनिक चिन्तन धाराओं का सार तत्व आत्मसात कर प्रौढ़ हुआ है। चिन्तन की उस उदात्त भाव भूमि पर भी डॉ.कुँवर चन्द्रप्रकाश जी दार्शनिक कवि न होकर भारतीय आध्यात्म के आर्दशवादी कवि हैं ।

साहित्य के क्षेत्र में कल्पना सृजनात्मक शक्ति है। कल्पना ही वह तत्व है जिससे 'कलाकार को नूतन सृजन अभिनव रुप-व्यापार विधान की शक्ति प्राप्त होती है । व्युत्पत्ति की दृष्टि से कल्पना ईमेजिनेशन शब्द अंग्रेजी में इसी कल्पना का पर्याय है। कवियों ने कल्पना को काव्य का महत्वपूर्ण तत्व माना है। प्रमुख भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के कल्पना से संबधित विचार निम्नलिखित हैं-

डॉ. रामकुमार वर्मा :-कविता में मुझे कल्पना सबसे अच्छी मालूम होती है, वही एक सूत्र है जिसको पकड़कर कवि इस संसार से उस स्थान पर चढ़ जाता है जहाँ इसकी इच्छित भावनाओं के द्वारा एक स्वर्ग संसार निर्मित रहता है। भावना तो इच्छा का तेजस्वी और यहां परिष्कृत रुप है वह हृदय को वेगवान बना देती है किन्तु कवि में निर्माण करने की शक्ति कल्पना द्वारा ही आती है।[1]

सुमित्रानन्दन पंत :-मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ और ईश्वरीय प्रतिभा का अंश भी मानता हूँ।[2]

डॉ. सत्य प्रकाश शर्मा :-कल्पना कलाकार की वह सृजन शक्ति है जिसके द्वारा सत्य, शिव एवं सुन्दर का स्वाभाविक अंकन तथा जीवन के यथार्थ की रक्षा करते हुए नूतन रूपों का सृजन सरलतापूर्वक सम्भव है।[3]

आई0 ए0, रिचडर्स के अनुसार :-प्रकृति की ओर से प्राप्त इंगितों पर मनुष्य का मन जिस वृत्ति के द्वारा पर्युत्सुक हो, उसे कल्पना कहते हैं।[4]

अत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कल्पना के सभी तत्वों को ध्यान में रखते हुए कल्पना की परिभाषा निम्न प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं- कल्पना मनुष्य की वह सृजनात्मक मानसिक शक्ति है जिसके द्वारा सत्य का उद्घाटन एवं नवीन सद्भावनाओं का निर्माण होता है।

कल्पना के विविध भेद :-काव्य के तत्वों में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है, कल्पना के द्वारा ही कवि बिम्बों की सृष्टि करता है। अलंकारों से कविता- कामिनी को सजाता है तथा भावों को तीव्रता के साथ प्रस्तुत करता है। वस्तुत: कल्पना का सामर्थ्य ही कवि की प्रतिभा है। रचना, व्यावहारिक विनियोग, व्यापार तथा ऐन्द्रिय बोध के आधार पर इसके कई भेद किये जा सकते हैं।

डॉ. केदारनाथ सिंह ने कल्पना के तीन भेद किये हैं-[5]

1. निष्क्रिय तथा सक्रिय कल्पना, 2. धारणात्मक तथा रचनाकार कल्पना 3- बौद्धिक, व्यावहारिक तथा सौन्दर्यपरक कल्पना

डॉ. कुमार विमल ने निम्नांकित दो तालिकाओं के माध्यम से कल्पना के विविध प्रकार बताये हैं-[6]

(तालिका संख्या-1)

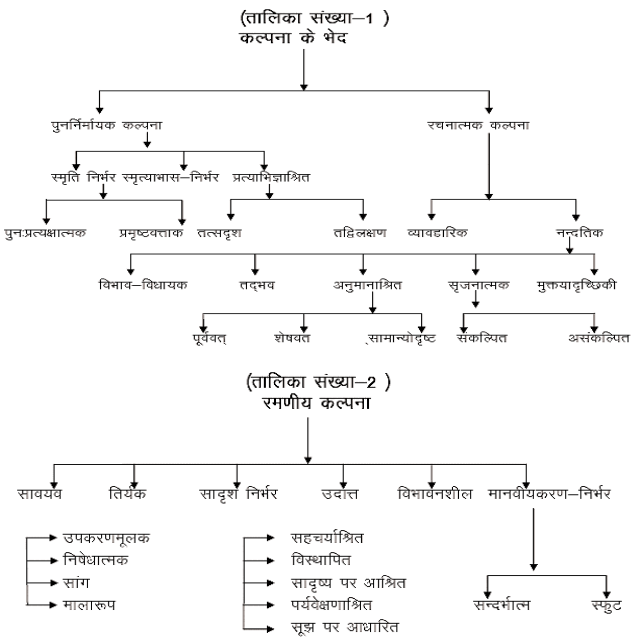

प्रमुख कल्पनाओं का परिचय:-

(1) **पुनर्निर्मायक कल्पना**- पुनर्निर्मायक कल्पना में विगत घटनाओं अथवा प्राप्त अनुभूतियों को स्मृति से उद्भव कर मानसिक बिम्बों में परिवर्तित किया जाता है। पुनर्निर्मायक कल्पना तीन प्रकार की होती है-

(क) **स्मृति निर्भर कल्पना** - स्मृति निर्भर कल्पना में कवि के स्वंय के अथवा पात्र के भोगे हुए सुख
- दुख: के क्षणों का स्मरण किया जाता है।

बोले कपिवर-हे जननी! तुम्हारी स्मृति के घन,
संसिक्त किया करते हैं रघुपति को प्रतिक्षण।
एकांत प्राप्त कर रटते हैं- सीता सीता,
लगता है उनका जीवन -क्रम रीता - रीता।
अवरुद्ध यद्यपि रखते हैं निज अश्रु- प्रवाह,
पर लक्षित होता मुख पर उर का निषित दाह।
रहता है जित - सरोज मुख संतत मुरझाया
राका - शशि पर हो कृष्ण मेघ ज्यों घिर आया।[9]

सीता माता के साथ बिताये हुये पलों को याद करते हुए श्री राम एकान्त में बैठकर अश्रु बहाते हैं जिससे श्रीराम की कान्ति सीता की स्मृति के बादलों में उसी प्रकार मन्द हो रही है जिस प्रकार आकाष में घिरे हुए बादलों में चाँद की।

(ख) **स्मृत्याभास कल्पना** - स्मृत्याभास कल्पना में पहले पढी हुई बातों के आधार पर अथवा अतीत का कोई अवशेष देखकर नूतन दृश्य विधान किया जाता है। कल्पना का आधार सत्य होने के कारण यह मार्मिक होती है।[10]

देखे राम -नाम के प्रकाशमान वर्णयुग,
जिनमें विभासित छटा थी रवि सोम की।
स्तब्ध मुग्ध - देखती रही निमेषहीन उसे,
दृष्टि में प्रकट थी पिपासा रोम-रोम की।।
कौन हर लाया यह मुद्रिका है राघव की,
समझी थी अनल- शिखा मैं जिसे व्योम की।
गूँजी इसी बीच सब ओर हनुमान- गिरा,
मानों परा वाणी रघुनाथ यश - स्तोम की।।[11]

हनुमान जब लकां में सीता माता को श्रीराम की स्मृति में घिरे देखते हैं तो वह अपना परिचय देते हुये श्रीराम की मुद्रिका दिखाते जिसे देखकर जानकी माता को यह विश्वास हो जाता है कि वह श्री राम के भेजे हुए दूत हैं।

(ग) **प्रत्याभिज्ञाश्रित कल्पना**-इस कल्पना में पूर्वकाल और वर्तमान काल का स्मृति द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस तरह प्रत्याभिज्ञा में अतीत की प्रत्यक्षित वस्तु का वर्तमान में पुनः प्रत्यक्ष होता है। कुल मिलाकर जिसमें पूर्वदेष और पूर्वकाल के साथ वर्तमान देश और वर्तमान काल दोनों की प्रतीति होती है तो उस प्रतीति को ही प्रत्याभिज्ञाश्रित कल्पना कहते हैं।[12]

सोचा कपि ने यही राम की प्राणप्रिया अभिरामा,
सीता हैं ये ही रघुकुल की लक्ष्मी लोक-ललामा।
युग-युग की जनकों की ये हैं तपोसिद्धि वरणीया,
अवनि - गर्भ से उत्थित ये ही शील-समृद्धि तुरीया।
सत् में ज्यों संघिनी और चिति में संस्थित संवित- सी,
राम- हृदय में हैं ये ही आह्लादमयी चिर विलसी।
इनके बिना राम करते हैं कैसे जीवन धारण?
रहे सोचते कुछ क्षण विस्मित विथकित मारुतनन्दन।[13]

मारुतनंदन ने जब लंका में सीता माता के दर्शन किये तो वह श्री रामचन्द्र जी के विरह वेदना के बार` में सोच में पड़ गये कि वह कैसे सीता माता के वियोग में जीवन व्यापन कर रहे हैं। वह सीता माता के वर्तमान की दशा को देखकर श्री राम के पूर्वकाल की दशा के साथ मिलान कर रहे हैं।

(2) **रचनात्मक कल्पना**- रचनात्मक कल्पना के द्वारा वस्तु वर्णन वर्तमान से भाविष्य की ओर किया जाता है। यह कल्पना पूर्वानुभूत वस्तुओं का नव सृजन करती है उसके द्वारा कवि अपनी अनुभूतियों में आवश्यक चयन कर सहृदय को आकृष्ट करने वाले बिम्बों की सृष्टि करता है। इसके व्यावहारिक तथा नन्दतिक दो भेद होते हैं। नन्दतिक रचनात्मक कल्पना के पाँच भेद हैं-[14]

(क) **तद्भव कल्पना** -तद्भव कल्पना एक प्रकार की व्युत्पन्न कल्पना है। मनुष्य के मनोजगत् में व्युत्पन्नता का सहज गुण है।[15]

लौटूंगा भग्न मनोरथ में जब सहोच्छ्वास,
होंगे वे कपि- सेनापति जीवन से निराश
असफल लौटेंगे कैसे वे सुग्रीव पास,
कैसे दिखलायंगे` उनको आनन उदास !
क्या बोलेंगे सम्मुख होंगे जब रघुनन्दन,
ष्आर्या का वृत्त कहोष् पूछेगें जब लक्ष्मण ।
क्या क्षमा करेंगे उग्रदण्ड कपिराज धीर,
लौटेंगे अवधि बिता कर जब हम प्लवग वीर?
हो ग्लानि - गलित देंगे सब अपने प्राण त्याग-
विक्षुब्ध महाकवि के उर में उपजा विराग।[16]

पवनसुत के यह कल्पना मात्र से ही कि जानकी माता को अपने साथ वापस न ल` जा पायें तो उनकी सेना और रघुनन्दन को वह क्या कहेंगें इन मनोभावों की कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह ने बड़ी ही मार्मिकता से कल्पना की है।

(ख) **सृजनात्मक कल्पना**-इसमें दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच सम्बन्ध - सूत्र स्थापित किया जाता है तथा एक तीसरे पदार्थ की सृष्टि की जाती है।[17]

स्वर्ण महागिरी सी लसी देह,
प्रभाभरिता उदयोन्मुख भानु की।
पिंग दृगों में प्रबुद्ध समिद्ध थी,
अर्चियाँ कोटि ज्वलन्त कृशानु की ।
सप्त महार्वणों की गहराइयाँ
माप बनीं जिनकी महाजानु की।
प्रज्ञा ऋतंभरा जाग उठी उन,
राम के दूत कृती हनुमान की।[18]

जब रावण के समक्ष महाबलि हनुमान को प्रस्तुत किया जाता है तो उनकी शक्ति व शौर्य को देखकर श्री रघुनन्दन की विराटता का परिचय मिलता है जो सृजनात्मक कल्पना को प्रदर्शित करती है ।

(3) **आच्छादक कल्पना**:-आच्छादक कल्पना में कवि पुराने कवियों की कल्पनाओं पर अपनी कल्पना का रंग चढाकर उन्हें इस रूप में प्रस्तुत करता है कि वह उसकी अपनी कल्पना हो जाती है।[19]

कोटि-कोटि बालरवि के समान विग्रह को,
अक्षहंता लक्ष्मण के प्राणदाता को प्रणाम ।
कामजयी, रावणजयी को राक्षसान्तक को,
बाल ब्रह्मचारी एकादश रुद्र को प्रणाम ।
दीनजनरोचन को, संकटविमोचन को,

कविकुलकमल – विरोचन को है प्रणाम।[20]

आच्छादक कल्पना के द्वारा कुँवर चन्द्रप्रकाश ने 'रामदूत' महाकाव्य को अपनी कल्पना का रंग चढाकर उसे अन्य काव्यों से भिन्न किया है।

(4) रमणीय कल्पना रमणीय कल्पना में मौलिकता होती है। इसे विदग्ध कल्पना, चित्र प्रगल्भ कल्पना या उत्पादक कल्पना भी कहते हैं इसमें प्रस्तुत व अप्रस्तुत के बीच सम्बन्ध सूत्रों की स्थापना रहती है और इन्हीं सम्बन्ध सूत्रों की सहायता से कल्पना में रमणीयता आ जाती है।[21]

देखा मारुतनन्दन ने कुछ चकित विभीषण गृह को,
उनको लगा किसी ऋषि के वे आश्रम में आये हैं।
जिसने निज गार्हस्थ्य तपोमय साँचे में ढाला है,
पद्म-पत्र पर पड़े हुए जल बिन्दु सदृश रहे जिसने –
लंका में भी जीवन को निष्कलुष सदा रखा है।
शान्त तपोवन से उपवन से घिरे हुए उस घर को।[22]

जब रामदूत लकां में सीता माता की खोज के लिये जाते हैं, तब विभीषण की कुटिया को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि रावण की लंका में यह ऋषियों के आश्रम समान किसका आश्रम है, जो इतना रमणीय प्रतीत हो रहा है। इस प्रकार पाश्चात्य एवं आधुनिक काव्य में कल्पना का महत्व सनातन रहा है। इसी प्रकार कल्पना ने कवि को जन्म दिया है तथा कला को समझने-परखने की दृष्टि । आपके काव्य में कथ्य की दृष्टि से कितने ही नवीन प्रंसगों की उद्भावना की गयी है और उन्हें मौलिक कल्पनाओं के द्वारा सजीव और प्राणवान बनाने का प्रयास किया गया है। आपका चिन्तन प्राचीन तथा आधुनिक चिन्तन धाराओं का सार तत्व आत्मसात् कर प्रौढ़ हुआ है। 'रामदूत' मारुतनन्दन के प्रति धार्मिक आस्था के साथ-साथ उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक महत्ता के प्रति भी डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की दृष्टि आशावादी है । युग-युग तक लोक सेवा और लोक मंगल के महत्व के कल्याण के लिये ही उनका अवतार हुआ है।

डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह जी का साहित्य भावी पीढ़ी के रचनाकारों के लिए आकाशद्वीप है जो गहन तिमिर में आलोकित होता है और चारों ओर प्रकाश फैलाता है ।

सन्दर्भ सूची:-

1. रूप राशि : डॉ0 रामकुमार वर्मा पृ01
2. आधुनिक कवि काव्य लालित्य : डॉ0 सत्यप्रकाश शर्मा पृ0 20
3. आधुनिक कवि सुमित्रानन्दन पंत पृ0 39
4. कौलरिज ऑन इमेजिनेशन : आई0 ए0 रिचडर्स पृ0 127
5. कल्पना और छायावाद केदारनाथ सिंह पृ0 20
6. सौन्दर्य शास्त्र के तत्व : डॉ0 कुमार विमल पृ0 144
7. काव्य के निकष : डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ0 152
8. काव्य के निकष : डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ0 153
9. रामदूत कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 50
10. काव्य के निकष : डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ0 134
11. रामदूत कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 43
12. काव्य के निकष : डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ0 153
13. रामदूत: कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 36
14. काव्य के निकष डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ0 153
15. काव्य के निकष : डॉ0 सत्य प्रकाश शर्मा पृ 154
16. रामदूत कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 20
17. काव्य के निकष : डॉ0 सत्यप्रकाश शर्मा पृ0 156
18. रामदूत: कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 73
19. काव्य के निकष : डॉ0 सत्यप्रकाश शर्मा पृ0159
20. रामदूत : कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0199
21. काव्य के निकष : डॉ0 सत्यप्रकाश शर्मा पृ0 156
22. रामदूत : कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह पृ0 22